(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No III, Jul-Sep ISSN: 2249-4642

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में गुप्तकालीन अभिजात्य वर्ग की भूमिका

NANNAWARE AJAY MAHADEORAO

DEPARTMENT OF HINDI
CMJ UNIVERSITY
SHILLONG, MEGHALAYA

जयशंकर प्रसाद : जीवनवृत्त

साहित्य शास्त्र के आचार्यों ने 'गुणों में प्रसाद गुण की महत्ता को निमांकित शब्दों में गाया है–

''सूखे ईधन को जिस प्रकार अग्नि एकदम आत्मसात् कर देती है, उसी प्रकार 'प्रसाद गुण' सह्रदय पूरे मानस पर छा जाता है।''[1]

हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रसाद 'प्रसाद गुण' की इसी महान् परम्परा के साथ अवतरित हुए थे। उनका समस्त साहित्य किसी भी सहृदय के मन और मस्तिष्क को बहुत गम्भीरता से प्रभावित कर जाता है।[2]

आधुनिक हिन्दी साहित्य के सर्वागीण विकास में सर्वाधिक योगदान देने वाले श्री जयशंकर प्रसाद का भारतीय–काव्य–सहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रसाद जी की सर्वतोन्मुखी प्रतिभा में कवि, नाटककार कथाकार, उपन्यासकार, आलोचक, निबन्धकार, दार्शनिक, और इतिहासज्ञ के समस्त गुणों का अभूतपूर्व समन्वय दिखाई देता है। हिन्दी साहित्य को उपदेशात्मक, इतिवृतात्मक और आदर्शवाद की नीरसता से निकालकर प्रेम सौन्दर्य, भावत्मक, मोहकता की कोमलता और सूक्ष्मता तथा दर्शन की गम्भीर किन्तु रोचक भूमिका प्रदान करने का श्रेय'प्रसाद' जी को है।

अभिजात्य : परिभाषा

किसी भी वस्तु या प्रवृत्ति को पूरी तरह जानने या समझने के लिए यह अति आवष्यक है कि उसकी परिभाषा निष्चित कर ली जाए। इस दृष्टि से यहां 'अभिजात्य' की परिभाषा स्थिर कर लेना समुचित है। समाज को कई प्रकार से बांटा जा सकता है जैसे लिंग के आधार पर, आयु के आधार पर जाति व प्रजाति के आधार पर। लेकिन ऐसा विभाजन पहले हुआ करता था, किन्तु आज ये आधार पुराने माने जाने लगे हैं।[1] आज सामाजिक विभाजन का कार्य

IJRSSH

वर्ग के आधार पर किया जाने लगा है और यहीं सामाजिक विभाजन का आधुनिकतम आधार माना जाने लगा है। इसकी विषेषता यह है कि इसमें समाज का विभाजन अनुप्रस्थ ढंग से होता है। इस प्रकार अनुप्रस्थ ढंग से समाज का विभाजन करने से उसके कई भाग बनतें है, जिन्हें वर्णो की संज्ञा दी जाती है। इसमें अभिजात वर्ग(उच्च वर्ग), मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग तीन मुख्य वर्ग होतें है।

किसी भी वर्ग में उस वर्ग के लोगों का रूतबा या ओहदा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है।[2] इसी से लोगों का कोई वर्ग निर्धारण होता है किन्तु रूतबा या ओहदा अपने आप नहीं बनता, यह वर्ग के सदस्यों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर आधारित होता है अर्थात् जैसे किसी व्यक्ति की सामाजिक, आर्थिक स्थिति होगी, उसी के अनुसार वह किसी विषेष वर्ग की संज्ञा से अभिहित होगा। इसलिए यदि यह कह दिया जाए कि व्यक्ति की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का वर्ग–निर्धारण में महत्त्वपूर्ण या निर्णायक भूमिका होती है, तो सम्भवतः अतिष्योंक्ति न होगी। इसके अतिरिक्त व्यक्ति का जन्म, वंष, परम्परा सम्पत्ति, व्यवसाय, राजनीतिक शक्ति, षिक्षा या बौद्धिक सफलता आदि पर भी किसी व्यक्ति का रूतबा या ओहदा(पद) निर्भर करता है। ये सभी बातें अभिजात वर्ग पर लागू होती है। इससे अभिजात्य की परिभाषा इस प्रकार से दी जा सकती है–'' यह वर्ग समाज का ऊपरी हिस्सा है जो समाज को अनुप्रस्थ ढंग से विभाजित करने से बनता है और जिसमें मिलते जुलते रूतबे या ओहदे के लोग होते हैं, जिनकी विषेष आर्थिक व सामाजिक स्थिति और प्रवृत्ति होती है जो आमतौर पर उनकी वंष–परम्परा, सम्पत्ति, राजनीतिक शक्ति, व्यवसाय, षिक्षा या बौद्धिक सफलता से निर्धारित होती है।''

गुप्तकालीन अभिजात्य के सन्दर्भ में जयशंकर प्रसाद का नाटक साहित्य

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार हैं । हिन्दी के ऐतिहासिक नाटकों की रचना में तो उनका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है । उनके नाटकों में प्राचीन भारतीय सभ्यता व संस्कृति के दर्शन होते हैं । गुप्तकाल से सम्बन्धित उनके दो नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' तथा 'स्कन्दगुप्त' हैं । प्रसाद जी द्वारा रचित 'राज्यश्री' नाटक विद्वानों द्वारा हर्षवर्धनकाल में माना गया है, किन्तु इसमें गुप्त राजाओं का भी वर्णन मिलता है, इसलिए इस नाटक को भी प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में समाहित कर लिया गया है । 'ध्रुवस्वामिनी' में चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकराज का विध्वंस करके 'ध्रुवस्वामिनी' के मान सम्मान की रक्षा तथा उसका चन्द्रगुप्त से प्रेम का वर्णन मिलता है । इसमें यह भी दिखलाया गया है कि यदि पति का आचरण ठीक नहीं है और वह कर्मों से राजकिल्विषी

क्लीव है तो ऐसी अवस्था में पत्नी पर उसका कोई अधिकार नही । इसमें तत्कालीन समाज में विधवा विवाह का भी औचित्य बताया गया है। ' स्कन्दगुप्त' में गुप्तकाल के अव्यवस्थित उत्तराधिकार नियम की चर्चा की गई है।[1] राजनीतिक षड्यन्त्रों का जगह–2 उल्लेख मिलता है । बड़े–बड़े उच्चाधिकारी राजनीतिक चालों में सिद्धहस्त हैं । उच्च कुल की स्त्रियाँ भी कूटराजनीति से परिचित है । इसमें रानी द्वारा अपनु पुत्र को राजसिंहासन पर बैठाने के लिए षड्यन्त्रों का प्रयोग किया गया है । इसके अतिरिक्त 'स्कन्दगुप्त' की राज्य के प्रति उदासीनता, उसके उच्च आदर्श व उसकी वीरता का चित्रण मिलता है । 'राज्यश्री' हर्षवर्धन काल से सम्बन्धित नाटक है । उस समय गुप्त राजाओं का प्राधान्य नष्ट हो चुका था। किन्तु फिर भी बचे हुए राजकुमार गुप्तवंश की प्रतिष्ठा को पुनः लाना चाहते हैं।

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित इन नाटकों में तत्कालीन सभ्यता व संस्कृति का चित्रण स्पष्टतः मिलता है । नाटकों में गुप्तकालीन अभिजात वर्ग की विभिन्न गतिविधियों पर प्रकाश पड़ता है । प्रसाद ने नाटकों के माध्यम से तत्कालीन राजनीति का भव्य चित्र खींचा है । राजनीतिक फायदों के लिए उच्च–वर्ग के लोग बुरे से बुरे कर्म करने को उद्यत हैं । जिसके फलस्वरूप गुप्तों का प्राचीन स्थापित गौरव नष्ट होता जा रहा है । राजा स्वयं ही नहीं अपितु राजवधुएं, उच्च अधिकारीगण सभी पथभ्रष्ट हैं और उनका चारित्रिक पतन होता जा रहा है । जहाँ एक ओर रामगुप्त जैसे विलासी राजा हैं तो दूसरी ओर चन्द्रगुप्त तथा स्कन्दगुप्त जैसे उच्च आदर्शवान शासक भी है । पर्णदत्त चक्रपालित जैसे उच्चाधिकारी भी हैं जो गुप्त साम्राज्य के गौरव को बढ़ाने में लीन हैं तो दूसरी ओर शर्वनाग, भटार्क, शिखरस्वामी जैसे देशद्रोही अधिकारी व मंत्री हैं जो गन्दी राजनीतिक चालों से गुप्तसाम्राज्य की जड़ों को खोखला बना रहे हैं । इस प्रकार अच्छाई का बुराई से संघर्ष चलता है । सभी इस संघर्ष से जूझ रहे हैं । इसके अतिरिक्त उनके सामाजिक जीवन–विवाह, खान–पान, मनोरंजन के साधन, शिक्षा, उच्च कुल की नारी की स्थिति, सती प्रथा, उत्सव आदि पर प्रकाश पड़ता है । अभिजात वर्ग के धार्मिक जीवन में उनके प्रधान देवी–देवता, लोक विश्वास आदि का भी चित्रण मिलता है । प्रसाद के नाटकों में अभिजात वर्ग की कलात्मक प्रवृत्ति का वर्णन अपेक्षाकृत कम मिलता है ।

उपसंहार

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक उनकी अन्तिम नाट्य रचना हैं ध्रुवस्वामिनी नाटक में चन्द्रगुप्त द्वितीय का ध्रुवस्वामिनी से वाग्दान होना, ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त से राक्षस विवाह तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकराज का विध्वंस करके ध्रुवस्वामिनी की प्रतिष्ठा की रक्षा करना और फिर उससे पुनर्लगन होने की कथा कही गई है। इसके इलावा नारी की विवशता असाहयता, धर्म का बन्धन आदि को भी दर्शाया गया है। प्रस्तुत नाटक में 'ध्रुवस्वामिनी अपने अधिकारों के प्रति सजग दिखाई देती है, जिससे सहज ही गुप्तकालीन अभिजात स्त्रियों के अधिकारों का पता चलता है। इस प्रकार 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में ध्रुवस्वामिनी की रामगुप्त से मुक्ति तथा गुप्तकीन अभिजात वर्ग के विभिन्न रूपों को जयशंकर प्रसाद ने समुचित ढंग से पेश किया है।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में 'स्कन्दगुप्त' का एक विशिष्ट स्थान है। यह नाटक भी गुप्तकाल पर आधारित है। गुप्तकाल भारत के इतिहास का स्वर्ण काल है जिसका निरूपण प्रसाद जी ने बडी कुशलता से किया है। इस नाटक में गुप्तकाल के पतन की और उन्मुख होने का चित्रण किया गया है। यह वह समय है जब 'गुप्त साम्राज्य' का अधिपति कुमारगुप्त कुसुमपुर में अपना विलासी जीवन व्यतीत कर रहा है। युवराज स्कन्दगुप्त गुप्तकाल के उत्तराधिकार नियम की अव्यवस्था के कारण अपने पद एवं दायित्व से कुछ उदासीन एवं चिंतित रहता है, जिससे सम्राज्य का भविष्य अंधकारपूर्ण दिखाई पड़ता है। इसी समय मालव राज्य पर विदेशियों का आक्रमण होता है और एकाकी वीर स्कन्दगुप्त ठीक अवसर पर पहुँचकर राज्य की रक्षा करता है। इस नाटक में प्रसाद जी ने एक ओर भारत के गौरव और पतन के हेतु राजाओं की विलासिता एवं राज्य कर्मचारियों में कर्त्तव्य की पूरी तरह निष्ठा का अभाव बतलाया है तो दूसरी ओर यह भी स्पष्ट किया है कि स्कन्दगुप्त आदि ऐसे भी व्यक्ति थे, जिनमें देश की भावना ठाठें मार रही थी और उन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप युवराज स्कन्दगुप्त हूणों के आक्रमण को असफल बना सके थे। इस नाटक में प्रसाद जी की राष्ट्रीय भावना और भी उज्ज्वल, तीव्र, प्राणवान और त्यागमयी होकर आई है।

'राज्यश्री' में भी गुप्तकालीन अभिजात्य वर्ग का वर्णन मिलता है, इसलिए इसको भी शोध प्रबन्ध में शामिल किया गया है। 'राज्यश्री' मे राजतन्त्र के दो रूप दिखाई देते हैं– एक तो वर्धन राजवंश का शान जो संयम, न्याय और लोकहित पर आधारित है और दूसरा गुप्तों के

IJRSSH

उच्छृंखल राजवंश का शासन जो विलास, छल–प्रपंच एवम् हत्याकर्म से पाचिालित है। 'राज्यश्री' में देवगुप्त व नरेन्द्रगुप्त दोनों कुटिल राजतन्त्र के प्रतीक हैं। इन दोनों राजाओं में हम वैसा, व्यक्तित्व नहीं पाते, जैसा गुप्त युग में समुद्रगुप्त व चन्द्रगुप्त द्वितीय आदि राजाओं में था।

अन्त में कहा जा सकता है कि जयशंकर प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य मे अद्वितीय स्थान है। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' यह कहावत जयशंकर प्रसाद जी पर शत् प्रतिशत चरितार्थ होती है। प्रसाद जी का जन्म सम्पन्न परिवार में हुआ किन्तु प्रसाद जी को बचपन में माता पिता का प्यार अधिक नहीं मिल सका, यह उनके जीवन की बहुत बड़ी त्रासदी रही, जिसके फलस्वरूप वे सम्पन्नता से विपन्नता की ओर उन्मुख हुए। प्रसाद जी को स्कूली शिक्षा भी उच्च न मिल सकी किन्तु वे अध्ययनशील और विचारशील व्यक्ति थे। उन्होंने न केवल हिन्दी की समस्त प्रचलित साहित्य विधाओं में सर्जना की, अपितु उन रचनाओं के कीर्तिमान भी स्थापित किए। डॉ. मण्डन मिश्र के अनुसार ''यह कथन अत्युक्ति पूर्ण नहीं होगा कि प्रसाद हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग के'वेदव्यास' हैं। जिस प्रकार 'व्यास'ने संस्कृत–साहित्य और भारतीय संस्कृति को प्रभावित किया है, उसी प्रकार हिन्दी–साहित्य का वर्तमान स्वरूप किसी भी क्षेत्र में प्रसाद जी के प्रभाव से उन्मुक्त नहीं है। प्रसाद जी का साहित्य आगे आने वाले लेखकों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है और इसमें इतनी गम्भीरता और अगाधता है कि वह युगों–युगों तक सहस्रों लेखकों को प्रेरणा देता रहेगा।'' प्रसाद जी ने नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध आदि सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दिया। जिस भी विधा में उन्होंने पदार्पण किया, वहीं सफलता उनके कदम चूमती रही। इस प्रकार प्रसाद जी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा से युक्त थे। डॉ. इन्द्रनाथ मदान के शब्दों में – – – ''हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रसाद जी का व्यक्तित्व अप्रतिम है। वे एक ही साथ कवि, दार्शनिक, कथाकार, नाटककार सभी रूपों में हमारे सामने आते हैं, यों ओर भी ऐसे व्यक्ति होंगे जिनमें एक नहीं ; कई विभिन्न तत्वों का समावेश होगा, परन्तु उन सभी तत्वों में से वे एक ही विशेष तत्व के लिए प्रशंसित होगें, प्रसाद जी के साथ ऐसा नहीं है। उनके व्यक्तित्व में जितने भी तत्व हैं, वे सब अपना–अपना अलग अलग महत्त्व रखते हैं। अपनी कविता अपना दार्शनिक चिन्तन अपनी कथात्मक वृत्ति और अपनी नाट्यकला सभी में उन्होंने समान रूप से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह उत्कृष्ट लिखा है। कहीं शैथिल्य नहीं, कहीं भर्ती का प्रयत्न नहीं, कही कृत्रिमता नहीं। सब एकदम ठोस, स्वाभाविक और लाजवाब। साहित्य में इस प्रकार की अभूतपूर्व सफलता महान, प्रतिभाशाली व्यक्तियों में ही मिलती है। प्रसाद ऐसे ही प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।''

परिशिष्ट

(क) आधार ग्रन्थ–सूची

लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशन
जयशंकर प्रसाद	स्कन्दगुप्त	अनीता प्रकाशन हिन्दी साहित्य के प्रमुख प्रकाशक 3696, चर्खेबालान, दिल्ली–110006
जयशंकर प्रसाद	ध्रुवस्वामिनी	सुमीत पब्लिकेशन्स
प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी		
प्रसाद वाङ्मय खण्ड–2	राज्यश्री	लोकभारती प्रकाशन 15ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–2

(ख) सहायक ग्रन्थ

शीला कुमारी	प्रसाद के नाटकों में पात्र–सृष्टि सौन्दर्य	एम.ए. द्वितीय भाग के लिए पंजाब विश्वविद्यालय को प्रस्तुत अनुबन्ध 1974
तिवारी, भोलानाथ	प्रसाद की कविता	साहित्य भवन(प्रा.) लिमिटेड इलाहाबाद 1974
हरीन्द्र	प्रसाद का नाट्य साहित्य परम्परा एवं प्रयोग	प्रकाशन, प्रतिष्ठान, सुभाष बाजार, मेरठ

IJRSSH

छाबड़ा, गोविन्दलाल	महाकवि प्रसाद और लहर	आदर्श साहित्य प्रकाशन वैस्ट सलीमपुर, दिल्ली, 1973
अवस्थी कैलाशनाथ	प्रसाद साहित्य की समीक्षा	अनुभूति प्रकाशन, कानपुर, 1978
आप्टे, वामन शिवराज	संस्कृत हिन्दी कोश	मोतीलाल बनारसी दास, जवाहर नगर, दिल्ली 1987
शर्मा चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद	संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ	लाला रामनारायण लाल पब्लिशर और बुक सेलर
लुणिया, बी.एन	प्राचीन भारतीय संस्कृति	लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन आगरा, 1979
मजूमदार, रमेशचन्द एवं अनन्त सदाशिव	वाकाट्क–गुप्त–युग	मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर, दिल्ली, 1968
प्रदीप	ओरियन्ट कनसाइज डिक्शनरी	प्रदीप पब्लिशर्ज, फगवाड़ा ।
चन्द्र, सुरेशचन्द्र शुक्ल एवं कु. नीलम मसन्द	हिन्दी नाटक और नाटककार	पुस्तक संस्थान, नेहरू नगर, कानपुर, 1977
गुप्त, परमेश्वरी लाल	गुप्त साम्राज्य	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1970
हेमन्त, निर्मला	आधुनिक हिन्दी नाट्य कारों के सिद्धान्त	अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली, 1973

अग्रवाल, सुरेश	भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त	अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली, 1992
अधिकारी, महावीर	प्रसाद का जीवन दर्शनः कला और कृतित्व	आत्मा राम एण्ड सन्ज, काश्मीरी गेट, दिल्ली ।
ओझा, कैलाशपति	हिन्दी त्रासदी सिद्धान्त और परम्परा	साहित्य सदन, देहरादून, 1968

IJRSSH